वर्ष-2, अंक-3, मार्च 2015

गौरैया

पर्यावरण एवं वन विभाग का मासिक मुखपत्र

बिहार सरकार

होली हो इको फ्रेंडली

साइकिल चलाओ-पर्यावरण बचाओ

'स्वर्ग का फूल' गुलमोहर

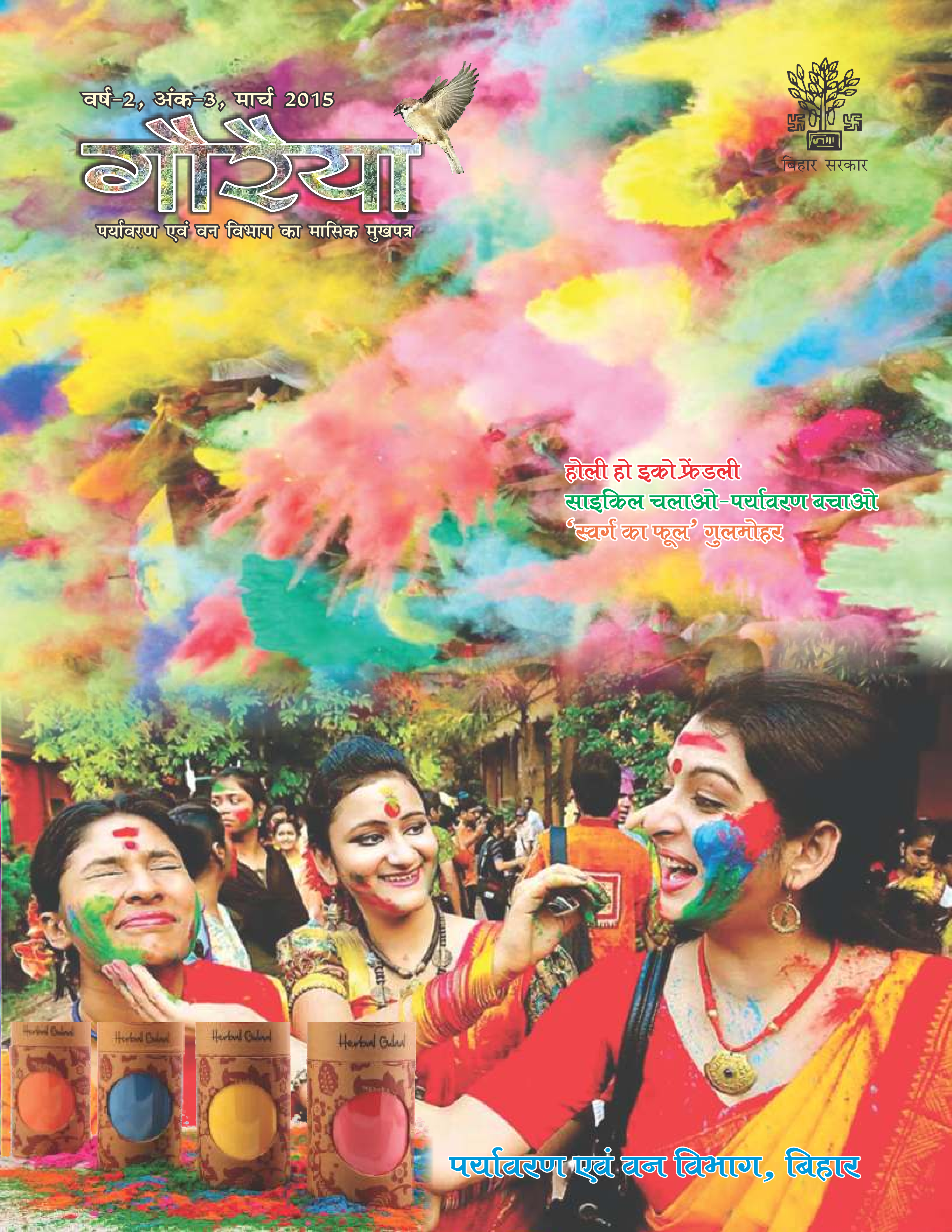

पर्यावरण एवं वन विभाग, बिहार

दीमकों की निराली दुनिया

nhed dk uke lur gh fnekx e ml tho dh rLohj mHkjrh g tk gekjh phtk dk cckn dj Hkkjh udlku igpkrk gA dkxt vkj ydMh d lkekuk dk pV dj tkuk bld fy, pVfd;k dk [ky gA 'kk;n blh otg l eu"; bUg viuk n'eu ekurk gA yfdu] ;g txy ,o vU; LFkyh; ikfjfLFkfrd r=kk e ikni thou d fy, mi;kxh rRok d pØ.k (Cycling) e egÙoi.k ;kxnku djrk gA çÑfr e bldh Hkfedkvk (Bacteria) ,o dodk (Fungi) vkfn d tlh vi?kVd (Decomposer) dh gkrh g] yfdu nhed bl ekey e T;knk mi;kxh gkrk g D;kfd ;g 'k"d {k=kk e Hkh ;g dke lQyrkiod djrk g tgk vi?kVd d :i e thok.kvk ,o dodk dh Hkfedk cgr gh de gkrh gA ;gh ugh] nhedk dk mud Je&foHkktu ,o d'ky lxBu d fy, Hkh tkuk tkrk gA

vkb,] tkur g D;k fo'k"k g bl tho e!

nhed dhV ox d vkblkIVjk (Isoptera) leg dk lnL; gA fo'o d lHkh Hkkxk e forfjr bldh djhc 2700 çtkfr;k ikb tkrh gA nhedk dk leg lkekftd ç.kkh d rkj ij ,d cLrh (Colony) e jgrk gA bu cfLr;k e db ihf<;k d dhV ,d lkFk jgr g rFkk çR;d dhV cLrh e fofHkUu dkek dk djrk gA dN blh rjg dh lkekftd O;oLFkk phfV;k ,o e/kefD[k;k e Hkh n[kh tkrh g yfdu nhedk e bl O;oLFkk dk mnHko vU; dhVk l igy gvk gA

nhedk dh cLrh dk ckEch (Termitarium) dgr gA ,d ckEch e ldMk l ydj djkMk nhed jgr gA nhed dh ckEch tehu d vUnj] tehu d mQij (Vhy d vkdkj e) vFkok o{kk d mQij ;k vUnj gkrh gA ckEch dh vkÑfr ,o eki nhed dh çtkfr ,o Vhy dh vk; ij fuHkj djrh gA tehu d mQij dh Vhyuek ckEch dk foLrkj tehu d vUnj l gkrk gA ckEch d Hkhrj dejk d rkj ij nhed vkJ; ufydkvk (shelter tubes) dk fuek.k feVVh rFkk viu ey ,o ykj (saliva) dh lgk;rk l djr gA l[ku d ckn cgr gh etcr gk tkrk gA tehu d mQij Vhyuek ckEch nhedk }kjk Hk.Mkj.k] rkieku fu;=k.k] goknkj cuku] vkikrdkyhu vkokl rFkk vM nu d fy, fd;k tkrk gA

nhed dh cLrh d vf/kdrj lnL; viuh ftnxh v/kj e xtkjr g] bl dkj.k mue n[ku dh {kerk ugh gkrh gµvFkkr] ; v/k gkr gA nhedk e cf¼ ,o lkpu dh {kerk dk Hkh vHkko gkrk gA nhedk d bru NkV] v/k ,o cf¼ghu gku d ckotn bru vlk/kj.k rjhd l ckEch fuek.k dh dyk dk oKkfud vHkh Hkh le>u dh dkf'k'k e yx g, gA

nhedk dh ckEch e leg&O;oLFkk ,d Lo&lxfBr vkj fodæhÑr çc/ku dk cgrjhu ueuk gkrh gA nhed dh dkykuh d lnL;k dk vdy e db vfLrRo ugh gkrk g] vxj mUg dkykuh l gVk fn;k tk, rk ; fdlh dke d ugh jg tkr gA ijr lxfBr rkj ij ij >.M dh çKrk vkj lpuk ,d=k dju dh {kerk dk mi;kx [kk|&lkrk rFkk vU; t :jrk dk irk yxku ,o thou&;kiu e fd;k tkrk gA nhedk dh lxBu {kerk dk jkt mud chp çcy lpkj ç.kkyh g tks iQjkeku (,d çdkj dk tfod lko) ij vk/kfjr gkrh gA

nhed ikfjfLFkfrd r=k e lY;ykt ;Dr inkFkk dk vi?kVu dj fofHkUu rRok dk iupfØr djrk g tk ikfjfLFkfrd r=k d lryu d fy, vko';d gkrk gA lY;ykt ifÙk;k] ydfM;k ,o vU; ikni vxk dk e[; vo;o gkrk g ftl ipku dh {kerk çÑfrd :i l cDVhfj;k] dod ,o çkVkstkvk leg d lnL;k e ikb tkrh gA yfdu] ; l{e tho cM vkdkj d ikni vxk e feyu oky lY;ykt dk dkiQh /heh xfr l vi?kfVr djr gA ijUr] ; tho nhedk d vkgkj ukfydk e Hkh ik; tkr gA nhed iknd vo;ok dk [kku d nkjku drjdj NkVk dj nrk g ftl l bu l{e thok dk bl ipku e dkiQh lfo/kk gkrh gA ;g nhedk vkj l{e thok d chp vU;kU;kJ; lc/k dk n'kkrk gA nhed dh bl fØ;k d dkj.k çÑfr e ik/kk d fy, t :jh ik"kd rRok dh miyC/rk cuh jgrh gA

fcgkj e nhed dh ckEch n[ku d fy, lcl mi;Dr LFkku if'pe pEikj.k vofLFkr okYehfd Vkbxj fjtoZ g] tgk d lky o{k d ou e 10&12 iQV rd dh Åpkb okyh ckEch cgrk;r e gA ;gk vku oky i;Vdk dk ; cgr vkdf"kd djr gA

Mk- lehj dekj flUgk
okbYMykbiQ VLV vkiQ bfM;k

वर्ष-2, अंक-3, मार्च 2015

गौरैया

पर्यावरण एवं वन विभाग का मासिक मुखपत्र

संरक्षक

श्री पी.के.शाही

मंत्री, पर्यावरण एवं वन विभाग, बिहार

प्रधान सम्पादक

विवेक कुमार सिंह

सम्पादक

बी.ए.खान

कार्यकारी सम्पादक

विनोद अनुपम

सम्पादक मंडल

एस.एस.चौधरी

भारत ज्योति

ए.के.प्रसाद

पी. के.जायसवाल

मिहिर कुमार झा

संपर्क

शोध प्रशिक्षण एवं जन संपर्क प्रमंडल

संयुक्त भवन, नेहरु नगर, पटना

email-dfortpd@gmail.com

प्रधान संपादक की कलम से...

हमारे होली के रंग सूख भी नहीं पाएंगे कि उसके पहले 22 मार्च को विश्व जल दिवस हमें याद दिलाने आ जाएगा कि अपने त्योहार के बहाने प्रकृति के इस अनमोल खजाने को हमने बेवजह लुटाया। यह सिर्फ संयोग नहीं है, बल्कि प्रकृति का एक सन्देश है कि हम ये बात आने वाले दिनों के लिए नहीं भूलें कि इस पृथ्वी पर भीषण जल-संकट है। विश्व की लगभग सवा छः अरब आबादी में से एक अरब जनसंख्या को पीने का साफ पानी भी उपलब्ध नहीं है। जबकि विभिन्न इलाकों में पानी के लिये लड़ाइयाँ जारी हैं। पानी की गंभीरता देखनी हो तो कभी महानगरों में टैंकरों के आगे जुटी भीड़ को भी देखनी चाहिए या फिर रेगिस्तान के उन गांवों को याद करना चाहिए जहां आज भी मीलों-मीलों से ढोकर पानी की जरुरतें पूरी की जाती हैं। हम, खासकर बिहार के लोग इस मायने में प्रकृति के कृपापात्र हैं कि हमें खर्चने को अपार जलराशि मिली है, लेकिन यह भी पृथ्वी का सत्य है कि अपव्यय से बड़ी से बड़ी संपत्ति समाप्त होने में देर नहीं लगती। ऐसे में होली में जल के अपव्यय को नियंत्रित रखने का संकल्प लेकर हम एक नई शुरुआत कर सकते हैं।

होली में जल का अपव्यय सिर्फ रंगों के साथ नहीं होता, बल्कि रंगों का दुष्प्रभाव होली के बाद तक प्रभावी रहता है। आज होली के अवसर पर प्राकृतिक रंगों की परंपरा समाप्त-प्राय हो गयी है। अपने त्योहारों के प्रति हमारा यह अजीब-सा लगाव है कि उसे मनाने के लिए प्राकृतिक रंग बनाने का तो समय हम नहीं निकाल सकते, लेकिन उसी त्योहार के नाम पर पानी उलीचने से बाज नहीं आते, पहले रंगों और कीचड़ के साथ गंदगी फैलाने के लिए, फिर उसे साफ करने के लिए। हम पानी से समृद्ध बिहार वासी यह कल्पना भी नहीं कर सकते कि पानी के इस अपव्यय की कीमत हमारी भावी पीढी को किस तरह चुकाना पड़ सकता है। होली के साथ सिर्फ जल के अपव्यय की ही बात नहीं, इसके साथ प्रदूषण की समस्या भी उतनी ही गंभीर होती जा रही है। बाजार में आमतौर पर मिलने वाले रंगों के इस्तेमाल से हमारा स्वास्थ्य ही प्रभावित नहीं होता, पानी के साथ नदी-नाले होते हुए वह रासायनिक रंग पानी के स्रोत तक को प्रदूषित करता है।

वास्तव में हमारे त्योहार किसी न किसी रूप में प्रकृति से जुडे रहे हैं। छठ से लेकर वट-सावित्री, गोवर्धन पूजा और होली तक। आश्चर्य नहीं कि किसी भी धार्मिक अनुष्ठान में यहां फल-फूल, आम्र-पल्लव की अनिवार्यता मानी जाती है। होली भी पर्यावरण की गंभीरता और अनिवार्यता को स्मारित करने से ही जुड़ी रही होगी। कभी समय होगा जब होली के रंगों से हमें पलाश और अमलताश की महत्ता याद आती होगी। होलिका दहन पुराने घास-फूसों को जलाने के बहाने रहे होंगे। हमारे लिए यह विचारणीय है कि आखिर क्यों अब यही अवसर प्रकृति के खिलाफ खड़े हो रहे हैं। शहर के कोने-कोने को होलिका दहन के नाम पर पुराने टायरों से प्रदूषित करने की परंपरा के स्थान पर क्या रावण-दहन की तरह होलिका-दहन की परंपरा भी शहर के एक स्थान पर विकसित नहीं की जा सकती ताकि हमारी लकड़ियां भी बचें और हमारी कोलतार की सडकें भी पिघलने से बची रहें और सबसे बढ़कर टायर के धुएं से पूर्णिमा के चांद को भी काला होने से बचाए रख सकें। याद रखें, हमारे सभी त्योहार पर्यावरण संरक्षण का संदेश लेकर आते हैं, होली भी। तो मनाएं होली, लेकिन पर्यावरण का ख्याल रखते हुए।

आप सबको होली की रंगारंग शुभकामनाएं।

विवेक

(विवेक कुमार सिंह)

प्रधान सचिव

पर्यावरण एवं वन विभाग,बिहार

होली हो इको फ्रेंडली

भारत में त्योहारों एवं उत्सवों का सम्बन्ध किसी जाति, धर्म, भाषा या क्षेत्र से न होकर समभाव से है। यहाँ मनाये जाने वाले सभी त्योहारों के पीछे की भावना मानवीय गरिमा को समृद्धि प्रदान करना होता है। यही कारण है कि भारत में मनाये जाने वाले त्योहारों एवं उत्सवों में सभी धर्मों के लोग आदर के साथ मिलजुलकर मनाते हैं। होली सही मायने में हमारे त्योहारों के उद्देश्य को प्रदर्शित करती रही है,भारतीय समाज का एक प्रमुख त्योहार है,जिसमें "बुरा न मानो होली है" कहकर हम किसी भी अजनबी को रंगों से सराबोर कर देते हैं। परंतु समय के साथ होली भी अब अपना रूप बदल रही है अब सामाजिकता का स्थान प्रदर्शन लेती जा रही है। होली जो कभी प्रकृति के सान्निध्य का अवसर था,अब प्रकृति को ही चुनौती देती लगती है।

पहले रंग बनाने के लिए रंग-बिरंगे फूलों का प्रयोग किया जाता था। अपने चिकित्सीय गुणों के कारण इन फूलों से बना रंग रंगने के साथ त्वचा को निखारने का भी काम करता था। लेकिन समय के साथ जैसे-जैसे नगरों का विस्तार हुआ, पेड़ों की संख्या में कमी आने लगी, इसके साथ ही रंगों से जुड़े नफे-नुकसान की भी चर्चा होने लगी। फूलों से रंग बनाना मँहगा पड़ता, इसलिए नफे को ध्यान रखते हुए रंगों को बनाने के लिए रसायनिक प्रक्रिया का सहारा लिया जाने लगा। यह व्यापार की दृष्टि से तो मुनाफे का सौदा था, पर स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए अत्यन्त नुकसानदायक।

अपने आलस्य में हम यह भी भूल गए कि होली के रंगों को बनाने के लिए जिन जहरीले रसायनों का प्रयोग किया जाता है उनका स्वास्थ्य पर बहुत विपरीत प्रभाव पड़ता है। आमतौर पर काला रंग बनाने के लिए लेड ऑक्साइड का प्रयोग किया जाता है जिसका किडनी पर सबसे अधिक दुष्प्रभाव पडता है। इसी तरह हरा रंग कॉपर सल्फेट से बनता है इसका कुप्रभाव सीधा आँखों पर पड़ता है, जिसके कारण आँखों में एलर्जी, सूजन होती है तथा व्यक्ति अस्थायी रूप से अंधा भी हो सकता है। लाल रंग मरक्यूरी सल्फाइट से बनता है, यह रसायन अत्यंत जहरीला होता है,जिससे त्वचा का कैंसर तक हो सकता है। कभी-कभी ऐसे रंग भी बाजार में होली के रंगों के नाम पर बिक जाते हैं जिनके डिब्बों पर साफ तौर पर लिखा रहता है कि इनका प्रयोग केवल औद्योगिक उपयोग के लिए किया जा सकता है।

कहने को सूखे रंगों की होली खेलने को इको फ्रेंडली माना जाता है,लेकिन इसके साथ हम यह भूल जाते हैं कि बाजार में सामान्य तौर पर मिलने वाला गुलाल मुख्यत: दो घटकों सें मिलकर बनता है - कोलोरेंट जो जहरीला होता है और उसका आधार सिलिका या एस्बेसेटॉस हो सकता है, इन दोनों से ही स्वास्थ्य समस्याएं खड़ी हो सकती हैं। कोलोरेंट में हैवी मैटल होता है जिसके कारण अस्थमा हो सकता है, त्वचा में खुजली की शिकायत हो सकती है तथा यह आँखों पर भी विपरीत प्रभाव डालता है।

यदि हम थोडी मेहनत और होली के प्रति सम्मान महसूस करें तो होली में बाहर से रंग खरीदने के बजाय आप अपने घर पर इन रंगों को बना सकते हैं। हल्दी और बेसन को मिलाकर पीला रंग बनाया जा सकता है। टेसू के फूलों को पानी में उबालकर लाल रंग बना सकते हैं। गहरा गुलाबी चुकंदर से बनाया रंग भी हमारी होली को एक नया रंग दे सकता है। यदि अपने रंगों को गाढा बनाना चाहते हैं तो मेंहदी सुखाकर पीस लीजिए और फिर इसको पानी में मिला दीजिए। इसी तरह और रंग भी घर पर बनाये जा सकते हैं। लेकिन यदि बाजार से रंग खरीदने की मजबूरी ही हो तो खुले रंग की बजाय हर्बल रंग खरीदने की कोशिश करनी चाहिए। रंग खरीदने से पहले यह जानना जरूरी हैं कि आप जो रंग खरीद रहे हैं, वह किन तत्त्वों से और कैसे बना है।

होली के साथ जुड़ी है होलिका दहन की परम्परा। वास्तव में इस परंपरा की शुरुआत पर्यावरण के हित में की गयी होगी, लेकिन आज यह हमारी हरियाली के लिए समस्या बनती जा रही है। अनुमानत: एक होली में लगभग सौ किलो लकड़ी का इस्तेमाल किया जाता है। और ये होलिका दहन शहर में एक से अधिक स्थानों पर होते हैं तथा इसके आयोजकों का प्रयास होता है कि उनकी होली का आकार दूसरे की होली से बड़ा हो, इस प्रतिस्पर्द्धा में होलिका-दहन के नाम पर बड़ी संख्या में हरे पेड़ों को भी काट दिया जाता है। होलिका-दहन के बगैर हम होली की कल्पना भी नहीं कर सकते, लेकिन यदि हर चौराहे पर टायर, कचरे और हरी डालियों से होलिका दहन करने के बजाय शहर में एक स्थान पर खूबसूरती और श्रद्धा से होलिकादहन किया जाए तो शायद अधिक बेहतर हो। अभी भी शहर में कई स्थानों पर गोबर और भूसियों से बने कंडे से हो रहे होलिका दहन में होली के प्रति गरिमा ही नहीं, पर्यावरण के प्रति चिंता भी देखी जा सकती है।

विजय कुमार

अपव्यय नहीं, जल संरक्षण की शुरुआत करें इस होली

एक बार फिर रंगों की बौछार करने का दिन करीब है और सबने एक-दूसरे को रंगने की तैयारी कर ली है। यदि हम चाहें तो इस त्योहार को यादगार बना सकते हैं। हम यदि थोड़ी समझदारी से होली खेलें तो सड़कों पर व्यर्थ पानी नहीं बहेगा। हमारे शास्त्रों में भी जल की बर्बादी को 'पाप' की श्रेणी में रखा गया है। यदि हम चाहें तो इस पाप से बचते हुए एक जिम्मेदार नागरिक की तरह अपने दायित्वों का निर्वहन कर होली की रंगत कुछ और बढ़ा सकते हैं। एक सामाजिक पर्व होने के नाते यह किसी एक परिवार तक सीमित नहीं होता। इसलिए होली के कारण हमारे पर्यावरण को किसी प्रकार का नुकसान न पहुँचे, इसकी जिम्मेदारी पूरे समाज पर आती है।

सबसे पहले होली खेलने के लिये पानी की कुछ मात्रा तय कर लें, उसे अलग से स्टोर कर लें और और उसका निर्वहन करें कि चाहे जो हो जाये, इससे अधिक पानी होली पर खर्च नहीं करेंगे। बच्चों को गुब्बारे से होली नहीं खेलने दीजिये, एक तो उसमें पानी की मात्रा भी ज्यादा लगती है और दूसरे उससे चोट लगने का खतरा भी होता है। किसी बगीचे या मैदान में समूह बनाकर होली खेलने का प्रयास करें ताकि घर में रंग न फैलें, क्योंकि बाद में घर साफ करने में अधिकतम पानी खर्च होता है। होली खेलने से पहले पूरे शरीर और खासकर बालों पर अच्छी तरह से तेल मालिश कर लें या किसी लोशन का लेप लगा लें, इससे होली खेलने के बाद बालों और त्वचा का रंग छुड़ाने में बहुत ही कम पानी का लगेगा।

यदि आप रंग खेलने से पहले लोशन, क्रीम या तेल लगाना भूल गये हैं तो कोई बात नहीं, रंग में भींग जाने के बाद तुरन्त नहाने न बैठ जायें; बल्कि जहाँ-जहाँ ज्यादा रंग लगा हुआ है वहाँ नारियल का तेल मसलें और कुछ देर इंतजार करें। इसके बाद एक बार नहाने से ही रंग छूट जायेगा, और पानी की बचत होगी। जब यह तय हो जाये कि अब आपको होली नहीं खेलना है, उसी समय के बाद नहाने जायें, दो-तीन बार नहाना विशुद्ध रूप से पानी का दुरुपयोग है, बर्बादी है।

होली खेलते हुए ही नहीं, थोड़ी-सी सावधानी बरतकर होली के बाद तक की साफ-सफाई में भी पानी का अपव्यय रोक सकते हैं। दो बाल्टी पानी भरें, एक में साबुन के घोल वाला पानी और दूसरी में सादा पानी। दो बड़े स्पंज के टुकड़े लें। जिस जगह पर रंग ज्यादा हैं पहले वहाँ स्पंज से साबुन के पानी वाला घोल लगाकर उसे छुड़ाने का प्रयास करें। उसके बाद दूसरे स्पंज से सादा पानी में भिंगोकर उसे हल्के से निकालें इस प्रकार बहुत सा पानी बचेगा। सबसे अन्त में एक सूखे कपड़े से उस जगह को पोंछ दें। चुटकी भर वॉशिंग सोडे का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। इस प्रकार आप नहाने और फर्श धोने में बहुत सा पानी बचा सकते हैं।

सबसे बेहतर है अधिक से अधिक सूखे रंगों से होली खेलने को प्राथमिकता दें, अधिक से अधिक प्राकृतिक रंगों से होली खेलें, आजकल प्राकृतिक रंग आसानी से बाजार में उपलब्ध होते हैं। हमारे लिए 'इको फ्रैंडली होली' का विचार नया हो सकता है, पर अगर हम मथुरा-वृंदावन की होली देखें तो पाएंगे कि वहां होली गुलाल और फूलों की पंखुड़ियों से ही खेली जाती है। और इससे उनके त्योहार के आनंद में कोई कमी नहीं आती। वे ही नहीं, वहां दुनियां भर से आने वाले शैलानी भी इसी होली का आनंद उठाते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार सामान्य तौर पर नहाने में 20 लीटर पानी प्रतिदिन प्रति व्यक्ति खर्च होता है। सूखे रंग या गुलाल से होली खेलने के पश्चात् 40 लीटर पानी खर्च होगा पर अगर यही होली कैमिकल युक्त रंगों से खेली जाती है तो रंग छुड़ाने व नहाने में 60 लीटर पानी की खपत होगी।सहज ही अंदाजा लगा सकते हैं,एक शहर,एक राज्य और फिर एक देश की आबादी पर पानी का यह खर्च कितने गुणे बढ जाता है। हम याद रखें, यह वही पानी है जिसके लिए देश और दुनिया के

साइकिल चलाओ-पर्यावरण बचाओ

मुख्यमंत्री श्री जीतन राम माँझी ने वन एवं पर्यावरण विभाग द्वारा चलाये गये 'साइकिल चलाओ-पर्यावरण बचाओ अभियान के तहत चयनित प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया। अभियान की समाप्ति के उपरांत पुरस्कार के लिए उपस्थिति कूपन के आधार पर 293 व्यक्तियों को साइकिल, 185 व्यक्तियों को ट्रैक शूट, 26 व्यक्तियों को कॉलर टी. शर्ट एवं 35 व्यक्तियों को गोल गला का टी. शर्ट पुरस्कार के रूप में भेंट किया तथा प्रशस्ति पत्र दी। समारोह की अध्यक्षता वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री पी.के. शाही ने की।

मुख्यमंत्री ने समारोह का उद्घाटन दीप प्रज्वलित कर किया और कहा कि पर्यावरण सुरक्षा के लिए वन एवं पर्यावरण विभाग द्वारा यह अनूठी योजना मात्र बिहार में पहली योजना नहीं है बल्कि पूरे भारतवर्ष की यह अपने तरह की पहली योजना है। जिसके तहत साइकिल से संजय गाँधी जैविक उद्यान (चिड़ियाघर) में टहलने के लिए आने तथा साइकिल स्टैण्ड में साइकिल रखते हुये, टहलने के उपरांत वापस अपनी साइकिल से घर जाना था। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य लोगों में साइकिल परिचालन के प्रति आकर्षण पैदा कर सस्ते एवं पर्यावरण के अनुकूल साधन के प्रति प्रोत्साहित करना था। साइकिल परिचालन से जहां पूरे शरीर का व्यायाम होता है, वहीं सड़कों पर ध्वनि एवं वायु प्रदूषण के स्तर में कमी आती है। पेट्रोल-डीजल के खपत में कमी आती है एवं लोगों की आर्थिक बचत होती है। इसके अलावे सड़क दुर्घटना भी कम होती है।

मुख्यमंत्री ने इस अभियान के लिए वन एवं पर्यावरण विभाग के साथ-साथ सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया और राज्यवासियों से अपील किया कि वे पर्यावरण सुरक्षा के लिए छोटे-छोटे कार्यो के लिए एवं कम दूरी को तय करने के लिए साइकिल चलायें। उन्होंने कहा कि साइकिल गरीबों की सवारी है, साइकिल बुद्धिमानों की सवारी है। राज्य की सड़कों पर मोटर वाहनों की अधिकता से होने वाली परेशानियों की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुये उन्होंने कहा कि शारीरिक फिटनेस एवं आर्थिक बचत के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण के लिए साइकिल परिचालन को बढ़ावा दिया जाये। मुख्यमंत्री ने कहा कि पर्यावरण के दूषित होने का परिणाम सबसे अधिक गरीब समाज को भोगना पड़ता है। पर्यावरण ठीक रहेगा तो स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा। गरीबों के साथ पर्यावरण का चोली-दामन का साथ है। उन्होंने कहा कि पर्यावरण के प्रदूषित होने के कारण प्राकृतिक असंतुलन हो रहा है। बाढ़, सुखाड़ की समस्या बढ़ रही है। कार्बन डाइऑक्साइड का कम से कम उत्सर्जन हो, इसके लिए प्रयास करना चाहिये। पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए अधिक से अधिक वृक्ष लगायें, जंगल की कटाई को रोकें। राज्य में हरियाली के क्षेत्र को बढ़ायें। पर्यावरण की समस्या का हल मात्र सरकार से संभव नहीं है। इसमें हम सबको सहयोग देना होगा। उन्होंने कहा कि आज सामाजिक परिवर्तन के कारण पैदल चलना, साइकिल चलाना को लोग हीन भावना से देखते हैं। पैदल चलना व्यायाम, योगा के दृष्टि से सबसे बेहतर है। शरीर को दुरूस्त रखने के लिए साइकिल चलाना लाभदायक है। पहले लोग पर्यावरण के बारे में बहुत सोचते थे। यही कारण है कि पीपल के वृक्ष को लोग ब्रह्म के रूप में मानते हैं। पीपल का वृक्ष अत्यधिक आक्सीजन देता है।

वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री पी.के. शाही ने कहा कि सड़क पर बढ़ रहे वाहनों के कारण ही दुर्घटनायें, सड़क जाम हो रही हैं। उन्होंने साइकिल परिचालन को अपने दैनिक आवश्यकता के रूप में शामिल करने की आवश्यकता बताई। प्रधान सचिव, वन एवं पर्यावरण श्री विवेक कुमार सिंह ने समारोह को संबोधित करते हुये कहा कि 'साइकिल चलाओ पर्यावरण बचाओ' अभियान 1 सितम्बर 2014 से 31 दिसम्बर 2014 तक चलाया गया। अभियान में शामिल होने के लिए कुल 47 हजार 893 लोग शामिल हुये और साइकिल से उद्यान आये, जिनमें 1286 महिलायें एवं बच्चे शामिल थे। इस अभियान में शामिल सभी व्यक्तियों को एक-एक ग्रीन कैप दिये गये। 80 दिन या उससे अधिक आने वाले व्यक्तियों को साइकिल दिये जाने का निर्णय लिया गया। धन्यवाद ज्ञापन मुख्य वन संरक्षक श्री एस.के. चौधरी ने किया। समारोह में प्रधान वन संरक्षक श्री डी.के. शुक्ला, मुख्यमंत्री के विशेष कार्यपदाधिकारी यथा श्री धर्मेन्द्र सिंह एवं श्री गोपाल सिंह सहित अनेक वरीय अधिकारी उपस्थित थे।

वन अधिकारी की डायरी से

घायल लकडबग्घा को बचाने का अनुभव

Nk;k % Jh vkykd tu

घटना वर्ष 2005 की है। नवंबर माह का महीना था। ठंढ़ प्रारंभ हो गया था। मैं औरंगाबाद वन प्रमण्डल में वन प्रमण्डल पदाधिकारी के पद पर कार्यरत था। एक लकड़बग्घा शिकारी के जाल में कहीं फंसा था, लेकिन जान बचाकर जाल सहित भाग निकला। मुँह के जबड़े में फँसा गैयर का तार उसे काफी परेशान कर रहा था। वह घायल भी हो गया था। स्थानीय नागरिकों की भीड़ से जान बचाते हुए संध्या 5 बजे औरंगाबाद के मदनपुर गांव के एक घर के कमरे में घुस गया। घर की एक महिला जो उसे बाघ समझ रही थी, भय से उसे उस कमरे में बाहर का दरवाजा लगाकर बंद कर दिया। स्थानीय ग्रामीणों ने मुझे फोन से सूचित किया कि एक बाघ बाजार के एक घर में घुसा हुआ है। मैं तत्काल अपने वनकर्मी के साथ वाहन से वहाँ पहुँचा। मुझे बताया गया कि अमुक व्यक्ति के घर में बाघ बंद है। मकान मालिक द्वारा बताया गया कि उस कमरे में बाहर खिड़की से आप देख सकते हैं। मैं खिड़की से जब देखा तो बाघ जैसा दिखने वाला जानवर दिखा, जिसके बदन पर बाघ जैसा धारीनुमा निशान था, लेकिन वह मुंह छिपा रहा था। मैं समझ गया कि बाघ नहीं हो सकता है। यह अवश्य ही लकड़बग्घा होगा, क्योंकि लकड़बग्घा लज्जालु स्वभाव का होता है। कमरे में पिछवाड़े में लगी खिड़की से एक लंबे लाठी को डालकर उसके मुंह से सम्पर्क कराया। जर्मन सेफर्ड की तरह काला एवं चौड़ा मुंह वाला जानवर दिखा, जिसका जबड़ा काफी चौड़ा था एवं उसके मुंह में तार फँसा हुआ था। संध्या का समय हो चुका था, लकड़बग्घा (जंगली जानवर) घायल था। मैंने उसे अंधेरे में बाहर छोड़ने का निर्णय नहीं लिया क्योंकि वह घायल एवं बेचैन था। तुरंत उस रात्रि एक व्यक्ति को पिंजड़ा लाने पटना भेजा गया ताकि पिंजड़े में डालकर ईलाज हेतु संजय गाँधी जैविक उद्यान, पटना भेजा जा सके।

कमरे में घायल लकड़बग्घा रात्रि 9 बजे खिड़की के छड़ को जबड़े से मोड़ दिया और निकलकर भागना चाहा। इससे मुझे ज्ञात हुआ कि सही में जंगली जानवर रात्रि में शक्तिशाली हो जाते हैं। इसी अनुभव का लाभ मैंने उठाया। लकड़बग्घा चूंकि घायल था इसलिए उसे भागने नहीं दिया गया और खिड़की के बाहर पूरी रात आग लगाकर वनकर्मी को बैठा दिया। हम सभी जानते हैं कि जानवर आग से डरता है। इसलिए आग जलाने के कारण एक बार भी लकड़बग्घा खिड़की के पास नहीं आया।

पिंजड़ा पटना से आ जाने के बाद कमरे के दरवाजे के बाहर सटाकर रखा गया और ऊपर के हिस्से में लकड़ी को ठोक कर पूरा दरवाजा कवर कर दिया गया ताकि दरवाजा खोलने पर अगल-बगल या ऊपर से नहीं निकले और पिंजड़ा में ही जा सके। दरवाजा खोला गया (जो अंदर की तरफ खुलता था) एवं कमरे के बाहर की खिड़की से डंडे को डालकर लकड़बग्घा से संपर्क कराया, वह तुरंत खुले दरवाजे की तरफ बढ़ा और पिंजड़े में प्रवेश कर गया। उसके पिंजड़े में घुसते ही पिंजड़े का गेट ऊपर से गिरा कर बंद कर दिया गया।

लकड़बग्घा को पटना जैविक उद्यान भेजा गया जहाँ उसका ईलाज किया गया एवं स्वस्थ होने पर दर्शकों के लोकार्पण हेतु उपलब्ध करा दिया गया।

● पी. के. जायसवाल

हरियाली मिशन दृष्टि 2015 : घर-घर तक पहुंचे हरियाली

हरियाली मिशन के द्वारा 2015 के वर्षाकालीन मौसम में बिहार के 13 वन प्रमण्डलों में पथ तट योजना के तहत 4.56 करोड़ रुपये की लागत पर 402 कि.मी. में 5.24 लाख पौधों तथा नहर तटबंध योजना के तहत 8 वन प्रमण्डलों के अंतर्गत 6.17 करोड़ रुपये की लागत से 287 कि.मी. की लंबाई में 4.83 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है। नदी तटबंध योजना के तहत 6 वन प्रमण्डलों में 2.17 करोड़ रुपये की लागत से 78 कि.मी. में 2.26 लाख पौधे, मृदा एवं भू-संरक्षण योजना के तहत 8 वन प्रमण्डलों में 74.73 करोड़ रुपये की लागत से 25364 हे. में उपचार करने एवं 63.79 लाख पौधा लगाने की भी योजना बनाई है।

संयुक्त वन प्रबंधन योजना के तहत 8 वन प्रमण्डलों में 1.61 करोड़ की लागत से 1786 हे. में 10.37 लाख पौधा लगाने के साथ मुख्यमंत्री तसर विकास योजना के तहत 8 वन प्रमण्डलों में 11.14 करोड़ की लागत से 3878 हे. में 34.91 लाख पौधा लगाने का लक्ष्य रखा है। इस प्रकार हरियाली मिशन के द्वारा वर्षाकालीन मौसम में कुल 1.21 करोड़ पौधा लगाने का लक्ष्य रखा गया है।

उद्यान पौधशाला में 2014-15 में 52.13 लाख पौधे उगाये गये और 2015-16 के लिए 53.17 लाख पौधा उगाने का लक्ष्य रखा गया है। गैर योजना मद के पौधशालाओं से 2014-15 में 60.79 लाख पौधे उगाये गये और 2015-16 के लिए 69.20 लाख पौधे उगाने का लक्ष्य रखा गया है।

शहरी वानिकी योजना में 45 हजार पौधे लगाने एवं हर परिसर हरा परिसर योजना के अंतर्गत अभी तक कुल 401 परिसर में 77.46 हजार पौधा लगाने का लक्ष्य रखा गया है एवं संस्थाओं का चयन अभी भी जारी है। मुख्यमंत्री छात्र वृक्षारोपण योजना के अंतर्गत कुल 155 विद्यालयों के कक्षा छः के विद्यार्थियों को शामिल किये जाने का लक्ष्य रखा गया है जिससे कि वृक्षारोपण की योजना का प्रसार घर-घर तक सुनिश्चित किया जा सके।

सामाजिक परिवर्तन के वाहक बनेंगे वन

पर्यावरण एवं वन विभाग द्वारा मुंगेर एवं कैमूर के जंगलों के बीच बसे ग्रामीणों के गरीबी एवं बेरोजगारी को मद्देनजर भीम बांध एवं अघौरा वन क्षेत्र के लिए 114.30 लाख रुपये की लागत से समेकित विकास कार्य का प्रस्ताव सरकार के पास स्वीकृति हेतु भेजा गया है। इस प्रकार की योजना चलाने का मुख्य उदेश्य है, सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टिकोण से पिछड़े ग्रामों में कृषि, पशुपालन, स्वास्थ्य सेवा, वानिकी, मानव संसाधन से जुड़ी विकास कार्यों पर विशेष ध्यान देना। इसके अतिरिक्त उक्त क्षेत्र की दुरुहता, यातायात में होने वाली कठिनाई को ध्यान में रखते हुए पथों के सुदृढ़ीकरण, कौजवे, कल्भर्ट इत्यादि का निर्माण करना। स्वास्थ्य सेवा के तहत चलन्त स्वास्थ्य इकाई का भी गठन किये जाने का प्रस्ताव है। इससे जंगल के दुरूह क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को दवा एवं डॉक्टर की सुविधा उनके द्वार पर उपलब्ध हो सकेगा।

मुंगेर एवं कैमूर के जंगलों के बीच रहने वाले आदिवासी एवं गैर आदिवासी लोगों को उनके वास स्थल के पास रोजगार की सुविधा उपलब्ध नहीं रहने के कारण जीवन-यापन काफी कठिन रहता है एवं जीवन काफी गरीबी में गुजरता है। स्थानीय लोगों की आय में वृद्धि के लिए छोटे-छोटे जंगल आधारित कुटीर उद्योग लगाने की भी योजना पर विभाग में विमर्श चल रहा है। इन क्षेत्रों में उक्त विकास कार्यों की सफलता से ग्रामीणों को विकास की मुख्य धारा में शामिल किया जा सकेगा, जिससे उनके आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में सुधार होगा। ग्रामीण अपने-अपने कार्यो में व्यस्त रहेंगे तथा कोई असामाजिक तत्व उन्हें समाज की मुख्य धारा से अलग नहीं कर पाऐंगे। जंगल क्षेत्रों के समीप के अन्य कुछ ग्रामों के लिए भी इसी प्रकार की समेकित विकास की योजना बनाने हेतु विभाग प्रयासरत है।

गंगासम भूमि प्रादेशिक केंद्र, पटना

गांगेय क्षेत्र के जंतुओं के लिए समर्पित

इस पृथ्वी के जन्तुओं की महत्ता एवं विविधता के साथ ही साथ गांगेय क्षेत्र के जन्तुओं का टैक्सोनोमिक शोध एवं वन्य जीवों का सबल संरक्षण देने के लिए भारत सरकार के पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा भारतीय प्राणी सर्वेक्षण (जूलौजिकल सर्वे ऑफ इंडिया) गंगासम भूमि प्रादेशिक केंद्र, पटना की स्थापना मार्च 1965 में पटना में की गयी। यह शोध केन्द्र अपने स्थापना का 50वाँ वर्ष मनाने जा रहा है। स्वर्णजयंती वर्ष तक इस केन्द्र ने गांगेय क्षेत्र के जंतुओं के सर्वे एवं शोध के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित किया है। केंद्र ने एक अति आधुनिक संग्रहालय को भी विकसित किया है, जिसमे क्षेत्रीय जन्तुओं का नमूनों का संग्रह है जो कि अनायास विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं जागरूक व्यक्तियों को अपनी तरफ आकर्षित कर रहा है।

शुरू में इस केन्द्र का क्षेत्राधिकार बिहार राज्य जिसमें 38 जिलों के साथ-साथ एक राष्ट्रीय उद्यान (नेशनल पार्क) 11वन्यजीव आश्रयणी, एक टाइगर रिजर्व तथा दूसरे राज्य झारखण्ड जिसमें 24 जिले, एक राष्ट्रीय उद्यान (नेशनल पार्क), 10 वन्यजीव अभयारण्य तथा एक टाइगर रिजर्व को समाहित किया गया था। हालांकि जूलोजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के वार्षिक रिपोर्ट 1964-65 के अनुसार गंगा समभूमि प्रादेशिक केन्द्र, पटना का क्षेत्रीय कार्यालय का परिसीमन पश्चिम बंगाल से राजस्थान, बिहार, झारखंड तथा उत्तर प्रदेश का क्षेत्र जहां से गंगा नदी बहती है माना जाता है।

स्थापना के 50वें वर्ष में प्रवेश करने के उपलक्ष में यह केन्द्र लगातार टैक्सोनोमिक शोध, जीव जन्तुओं का सर्वे तथा क्षेत्रीय जीवों का राष्ट्रीय जूलौजिकल संग्रह के रूप में एक सुन्दर संग्रहालय की स्थापना करते हुए राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रों (रिसर्च पेपर्स) एवं किताबों का प्रकाशन कर चहुंमुखी विकास किया है। इस केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा समय-समय पर संरक्षित क्षेत्रों (प्रोटेक्टेड एरिया) तथा संरक्षित प्रजाति (प्रोटेक्टेड स्पेसीज) का मैनेजमेंट प्लान बना कर भारत सरकार एवं राज्य सरकारों को मदद पहुंचाया जा रहा है।

इस केन्द्र की कुछ महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं:

- इस केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा अबतक लगभग 200इंटेंसिव तथा 550एक्सटेंसिव सर्वे किया है।
- अब तक इस केन्द्र ने भारत के गांगेय क्षेत्र के लगभग 555 तरह के प्रजातियों का संग्रह कर नेशनल जूलोजिकल कलेक्शन का निबंधन किया है।
- विभिन्न प्रजातियों के अति सूक्ष्म जीवों से लेकर बड़े स्तनधारी प्राणियों के 1,75,000 नमूने/सैम्पल्स इस कार्यालय में मौजूद है।
- इस कार्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा प्रोटोजोआ से लेकर बड़े स्तनधारी प्राणियों (गंगा के डाल्फिन आदि) के ऊपर लगभग 500शोध पत्रों का प्रकाशन किया जा चुका है।
- इस कार्यालय के वैज्ञानिकों ने ऊतर बिहार के "फौना ऑफ चौर्स" प्रकाशित किया है जिसमें मोलस्का, इन्सेकटा, बर्ड एवं जुप्लैंक्टन की जैव-विविधता का समावेश किया गया है।
- गंडक नदी में पटना से वाल्मीकि बैराज तक नौका से यात्रा करके गंगा के डाल्फिन की आबादी पर विस्तृत लेख प्रकशित किया गया है। यहाँ के वैज्ञानिकों द्वारा झारखंड के विभिन्न संरक्षित क्षेत्रों का भी सर्वे किया जा रहा है।
- इस केन्द्र का पुस्तकालय काफी पुराना एवं समृद्ध है जिसमें विभिन्न प्रजातियों के आलेख आदि से सम्बंधित 2500किताबें, 6500 पेरियोडीकल्स, 1150दूसरे प्रकाशन, 800 शोधपत्र तथा 50विभिन्न जगहों के मैप उपलब्ध हैं।
- इस कार्यालय के पास लाइका स्टीरियो जूम माइक्रोस्कोप है जिसमें सूक्ष्म से सूक्ष्म जीवों की फोटोग्राफी हो सकती है।

शोध केन्द्र का इतिहास :

- डा. टी.के वाजिरानी, वैज्ञानिक एवं प्रभारी अधिकारी के निर्देशन में इस केन्द्र का 1965 में राजेन्द्र नगर में उद्घाटन हुआ।
- 4 मार्च 2014 को इसके भव्य भवन का विधिवत उद्घाटन पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के परामर्शी डा. आर. दलवाणी के द्वारा डा. के. वेंकटारमन, निदेशक की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।
- यह कार्यालय ग्रीन बिल्डींग (चहार-दीबारी का डबल लेयर, रेन वाटर हारवेस्टींग एवं इनर्जी एफिसियंट टेकनिक) के तर्ज पर बनायी गयी है।
- इस कार्यालय के वैज्ञानिकों के द्वारा हाल हीं में दो जिंदा गांगेय डाल्फिन को डोंक नदी से महानंदा नदी में सफलतापूर्वक अंतरित किया गया है जो राज्य के साथ-साथ देश के लिए लिए गौरव की बात है।
- आज इस राज्य के विभिन्न स्कूल एवं कालेजों के विद्यार्थियों, राज्य स्तरीय शिक्षण एवं शोध संस्थानों के वैज्ञानिकों को जंतुओं की पहचान करने में यहाँ के वैज्ञानिकों द्वारा सभी प्रकार की सहायता प्रदान की जा रही है।

डा. गोपाल शर्मा

होटल में हरियाली

आर्किटेक्ट्स और डिजाइनर इन दिनों आपनी डिजाइन को ज्यादा से ज्यादा से ज्यादा इकोफ्रेंडली बनाने पर ध्यान दे रहे हैं। इसी थीम पर बना है सिंगापुर का ग्रीन पार्क रॉयल होटल।

सिंगापुर की बिजनेस डिस्ट्रिक्ट में बना यह होटल युनिक और इको फ्रेंडली डिजाइन को लेकर चर्चा में है। 12 मंजिला इमारत को डिजाइन किया है वोहा आर्किटेक्ट्स ने। इसके फ्रंट में छह सुंदर बगीचे तैयार किए गए हैं। इसमें विभिन्न तरह के पौधे लगाए गए हैं।

बाहर से देखने पर यह इमारत किसी वर्टिकल गार्डन की तरह नजर आती है। गार्डन के मेंटेनेंस के लिए रेन कलेक्शन सिस्टम और सोलर एनर्जी का उपयोग किया जाता है। इसे सिंगापुर की सबसे बड़ी ग्रीन बिल्डिंग का अवार्ड मिल चुका है।

तस्वीरों में दिखाया पटना जू की खूबसूरत तितलियों का रंग

पटना जू में 20 फरवरी को फोटो प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया । प्रदर्शन कलर ऑफ पटना जू नाम की इस फोटो प्रदर्शनी में 107 प्रजातियों की तितलियों की तस्वीरें बनाई गई है । इन तस्वीरों को अपने कैमरे में उतारा है युवा फोटोग्राफर अंकित रंजन पाठक ने । इसकी खासियत यह है कि सभी फोटो जू में मौजूद तितलियों की हैं । यह यहां मौजूद तितलियों की विविधता को भी बताया है । सत्य ही इनमें कई विलुप्त होती प्रजातियों को भी देखा जा सकता है।

प्रदर्शनी का उद्घाटन पटना जू के निदेशक एस. चंद्रशेखर ने किया । इस मौके पर उन्होंने कहा कि प्रदर्शनी के माध्यम से यहां आने वालों को तितलियों की इतनी सारी प्रजातियों को एक ही जगह देखने को मिलेगी । इससे लोगों में प्रकृति और जैव विविधता के बारे में जागरूकता बढ़ेगी । वहीं इसे लगाने वाले अंकित रंजन पाठक ने कहा कि प्रदर्शनी में लगे फोटोग्राफ चार साल तक तितलियों पर किये गये उनके काम का संग्रह है ।

इको फ्रेंडली लकड़ी से होगा होलिका-दहन

होलिका दहन में जलने वाली 35 क्विंटल लकड़ी को बचाने के लिए होशंगाबाद जिले के सुपरली गांव के योगेंद्र सिंह सोलंकी ने एक अभियान चलाया है। इसके लिए वे पांच साल से इको फ्रेंडली लकड़ी तैयार कर उसे होलिका-दहन में उपयोग करते हैं जिससे न तो प्रदूषण होता न हरे पेड़ को नुकसान। पेड़ों को काटकर लकड़ी जलाए जाने से बचाया जा सकता है।

योगेंद्र सिंह सोलंकी का कहना है कि इको फ्रेंडली लकड़ी को वे चार दिन के भीतर तैयार कर लेते हैं। यह गोबर और फसल के कचरे से तैयार की जाती है। इस तरह से वे पांच साल से करीब 10 होलिका-दहन के लायक लकड़ी बनाकर अपने आसपास के गांवों के लोगों को देते हैं। उनके प्रयास से अब होशंगाबाद जिले के सुपरली गांव और उसके आसपास के ग्रामीणों में जागरूकता भी आई है।

'स्वर्ग का फूल' गुलमोहर

अपनी लाल, नारंगी फूलों की वजह से पलाश की तरह गुलमोहर को भी 'जंगल की आग' कहा जाता है। लेकिन यह वृक्ष महज रंगों से नहीं, बल्कि गुणों से भी भरपूर है। भारत में गुलमोहर का इतिहास काफी पुराना है। इसके फूलों से भगवान श्रीकृष्ण की प्रतिमा के मुकुट का शृंगार किया जाता है। लिहाजा, संस्कृत में इस वृक्ष को 'कृष्ण चूड' भी कहते हैं। यही कारण है कि हिन्दू धर्म में इसे काफी मान्यता दी गई है। गुलमोहर का वानस्पतिक नाम 'डेलोंक्सि रेजिया' है। जबकि संस्कृत में इसका नाम 'राज-आभरण' है, जिसका अर्थ होता है राजसी आभूषणों से सजा हुआ वृक्ष। गुलमोहर को फ्रांसीसियों ने काफी आकर्षक नाम दिया है, जिसका अर्थ होता है 'स्वर्ग का फूल'। गुलमोहर में नारंगी और लाल मुख्यत: दो रंगों के फूल ही होते हैं। परंतु प्राकृतिक रूप से पाई जाने वाली प्रजाति 'फ्लेविडा' पीले रंग के फूलों वाली होती है। यह भारत के विभिन्न हिस्सों में पाया जाता है। भारत के अलावा गुलमोहर युगांडा, नाइजीरिया, श्रीलंका, मैक्सिको, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका में भी पाया जाता है।

गुलमोहर को पहचान भले ही इसकी खूबसूरती के लिए मिली हो, लेकिन इस वृक्ष में पाए जाने वाले औषधीय गुणों की वजह से गुलमोहर को आयुर्वेद में भी काफी महत्ता दी गई है। इसके छाल, बीज और फूल तीनों का ही इस्तेमाल आयुर्वेद में किया जाता है, जो स्वास्थ्य के लिए काफी लाभदायक हैं। खासकर आदिवासी सिरदर्द और हाजमे के लिए इसकी छाल का प्रयोग करते हैं। इसकी छाल को ज्वरनाशी भी माना जाता है। वहीं, मधुमेह की कुछ आयुर्वेदिक दवाओं में भी गुलमोहर के बीजों को अन्य जड़ी-बूटियों के साथ मिलाकर उपयोग में लाया जाता है। गुलमोहर की एक कली के टुकड़े करके पानी में भिगो दें, थोड़ी देर बाद उसी पानी में से 1- 1 कप पानी सुबह-शाम पीएं, इससे मधुमेह में लाभ होगा। मलेरिया की दवा में भी गुलमोहर की छाल का प्रयोग किया जाता है। लेकिन, ये सभी प्रयोग किसी आयुर्वेदिक चिकित्सक की देखरेख में ही करें।

गौरतलब है कि होली के पारंपरिक तरीके से रंग बनाने में भी गुलमोहर के फूलों का प्रयोग किया जाता है। मेंहदी और आटे के साथ गुलमोहर के सूखे फूलों को मिलाकर इससे हरा रंग बनाया जाता है। गुलमोहर के फूल मकरंद के अच्छे स्रोत होते हैं। इसकी फली का रंग हरा होता है, जबकि इसके बीज भूरे रंग के काफी सख्त होते हैं जिस वजह से कई जगहों पर इसे ईंधन के काम में भी लाया जाता है। सामान्यत: गुलमोहर के पेड़ की ऊंचाई 20 से 25 फुट तक की होती है। जबकि इसके फूलों का आकार काफी बड़ा होता है।. इसके फूल काफी आकर्षक होते हैं। यह लगभग 13 सेंटीमीटर का होता है, जिसमें पांच पंखुड़ियां होती हैं।

सामाजिक तौर पर भी गुलमोहर काफी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भारत में वसंत से गर्मी तक यानि को मार्च से लेकर जून तक गुलमोहर की खूबसूरती को निहारा जा सकता है। यह वृक्ष तमतमाती गर्मी में अपनी छटा बिखेरती है। इसके फूलों के रंग आंखों को ठंडक देते हैं, जिस वजह से इसे पार्क, बगीचों और सड़क के किनारे लगाया जाता है। हिन्दी साहित्य में भी गुलमोहर की खूबसूरती का कई जगह वर्णन किया गया है। मियामी में तो गुलमोहर को इतना पसंद किया जाता है कि वहां के नागरिक अपना वार्षिक पर्व भी तभी मनाते हैं, जब गुलमोहर के पेड़ में फूल आते हैं। वैसे गुलमोहर को काफी दंभी माना जाता है क्योंकि यह किसी और वृक्ष को अपने पास टिकने नहीं देता। इसीलिए गुलमोहर लगाते वक्त इस बात पर खासा ध्यान देना चाहिए कि दो गुलमोहर के बीच कम से कम दस फुट की दूरी हो। मान्यता है कि घर के बगीचे के बीच में गुलमोहर लगाने से वास्तु दोष का निवारण होता है।

● नीति सुधा

वन-वन, उपवन--

छाया उन्मन-उन्मन गुंजन,
नव-वय के अलियों का गुंजन!

रुपहले, सुनहले आम्र-बौर,
नीले, पीले औ ताम्र भौंर,
रे गंध-अंध हो ठौर-ठौर
उड़ पाँति-पाँति में चिर-उन्मन
करते मधु के वन में गुंजन!

वन के विटपों की डाल-डाल
कोमल कलियों से लाल-लाल,
फैली नव-मधु की रूप-ज्वाल,
जल-जल प्राणों के अलि उन्मन
करते स्पन्दन, करते-गुंजन!

अब फैला फूलों में विकास,
मुकुलों के उर में मदिर वास,
अस्थिर सौरभ से मलय-श्वास,
जीवन-मधु-संचय को उन्मन
करते प्राणों के अलि गुंजन!

सुमित्रानंदन पंत

Design and printed by *Laser Printers*, Patna 4, Ph. 9334116085